



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 03, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2023)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

केसर की खेती कैसे करें

(सिमरन कौर, संदीप सिंह एवं *अमित कुमार)

राजस्थान कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

*संवादी लेखक का ईमेल पता: mahechamit211@gmail.com

केसर (Saffron) को अनोखी खुशबु और खास तरह के गुणों के लिए पहचाना जाता है। केसर मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत ही लाभदायक होता है, केसर का मूल्य अधिक होने के चलते इसे लाल सोना (Red Gold) भी कहा जाता है। औषधीय और गुणकारी पौधा होने के कारण इसका उपयोग प्राचीन काल से ही आयुर्वेदिक चिकित्सीय के रूप में होता रहा है। इसी तरह केसर को साबुन तथा सौन्दर्य प्रसाधन की चीजों के रूप में भी उपयोग में लाया जाता है। 2007 में तत्कालीन जम्मू कश्मीर सरकार ने केसर की खेती वाली जमीनों को किसी और काम के लिए इस्तेमाल करने या बेचने पर रोक लगा दी थी। 2020 में कश्मीर में 30 साल का रिकॉर्ड टूटा, जब 18 टन केसर का उत्पादन हुआ। केसर की गुणवत्ता के आधार पर इंटरनेशनल मार्केट में केसर तीन से पांच लाख रुपये प्रति किलो की दर से बिकता है। केसर के फसल की अवधि तीन-चार महीने की होती है। एक बार फूल तैयार होने के बाद किसान कम लागत में अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक केसर की कीमत लगातार बढ़ रही है। ऐसे में किसानों को गारंटीड इनकम हो सकती है। केसर की कीमत इसकी क्वालिटी पर निर्भर करती है। एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक भारत में केसर की कीमत डेढ़ लाख रुपए से शुरू होकर तीन लाख रुपये प्रति किलो तक जाती है। भारत में मुख्य रूप से जम्मू कश्मीर और हिमाचल प्रदेश में ही केसर की खेती होती है। आमतौर से केसर की खेती के लिए कश्मीर की वादियां पॉपुलर रही हैं, लेकिन अब ग्रीन हाउस जैसे वैज्ञानिक तरीकों का प्रयोग करके केसर उत्तराखंड की हर्षिल घाटी और उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड में भी उगाया जा रहा है। एक हेक्टेयर जमीन पर केसर के फूल उगाने पर किसानों को ढाई से तीन किलो सूखी केसर मिल जाती है।”

केसर की खेती के लिए उपयुक्त मिट्टी (Suitable Soil For Saffron Cultivation)

केसर की खेती में रेतीली चिकनी बलुई और दोमट मिट्टी का इस्तेमाल किया जाता है, किन्तु वर्तमान समय में उचित देखरेख कर इसकी खेती को राजस्थान जैसे शुष्क राज्यों में भी किया जा रहा है। केसर की खेती के लिए जल भराव वाली जगह नहीं होनी चाहिए, क्योंकि जलभराव की स्थिति में इसके बीज सड़कर नष्ट हो जाते हैं। इसकी खेती के लिए भूमि का P.H. मान सामान्य होना चाहिए।

केसर की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु और तापमान (Suitable Climate and Temperature for Saffron Cultivation)

केसर की खेती बर्फीले क्षेत्रों में अधिक होती है, केसर का उत्पादन सर्दी, गर्मी और बारिश तीनों ही जलवायु में होता है, सर्दियों में पड़ने वाली बर्फ और गीला मौसम इसके फूलों में होने वाली वृद्धि को रोक

देता है। जिससे बाद में नए फूल अधिक मात्रा में निकलते हैं, जो इसके लिए काफी अच्छा होता है। जब सूर्य की गर्मी से बर्फ पिघलने और जमीन सूखने लगती है, तब इसके पौधों में फूल आना आरम्भ होने लगते हैं, इन्हीं फूलों में केसर लगता है। लगभग 20 डिग्री के तापमान पर इसके पौधे अच्छे से वृद्धि करते हैं, तथा 10 से 20 डिग्री के तापमान पर इसके पौधे फूल बनने लगते हैं।

केसर की उन्नत किस्में (Improved Varieties of Saffron)

वर्तमान समय में केसर की केवल दो ही किस्में मौजूद हैं, यह केसर कश्मीरी और अमेरिकन नाम से जानी जाती है, भारत में अमेरिकन केसर को अधिक मात्रा में उगाया जाता है। केसर की किस्मों की जानकारी इस प्रकार है:-

कश्मीरी मोंगरा किस्म का केसर (Kashmiri Mongra Variety Saffron)

केसर की यह किस्म सबसे महंगी मानी जाती है, दुनियाभर में इस केसर की कीमत 3 लाख रूपए प्रति किलो से भी अधिक है। जम्मू कश्मीर के किश्तवाड़ और पंपोर में इस किस्म की केसर की खेती को किया जाता है। इसके पौधे 20 से 25 सेंटीमीटर ऊंचाई तक बढ़ते हैं।

इन पौधों पर बेंगनी, नीले और सफ़ेद रंग के फूल निकलते हैं, यह फूल आकार में कीप नुमा होते हैं। इन फूलों के अंदर दो से तीन लाल-नारंगी रंग के तन्तु (पंखुडियां) होती हैं, फूलों के अंदर उपस्थित यह तन्तु ही केसर होता है। लगभग 75 हज़ार फूलों से 450 ग्राम ही केसर प्राप्त होता है।

पौधों के लिए देखभाल (Care for Plants)

अमेरिकन किस्म का केसर (American Saffron)

केसर की इस किस्म को जम्मू-कश्मीर के अलावा कई जगहों पर किया जा रहा है। इस किस्म का केसर कश्मीरी मोंगरा केसर की तुलना में कम कीमत का होता है। इसके पौधों को किसी खास तरह की जलवायु की आवश्यकता नहीं होती है। केसर की यह किस्म राजस्थान जैसी शुष्क क्षेत्रों में उगाई जा रही है।

इसके पौधे चार से पांच फिट तक की उंचाई तक बढ़ते हैं, तथा पौधों के शिखर पर इसके डंठल बनते हैं। जिनपर पीले रंग के फूल निकलते हैं, इन फूलों में ही तन्तु होते हैं, जिनकी मात्रा बहुत अधिक होती है। इनके लाल हो जाने पर इन्हें तोड़ लिया जाता है।

केसर की खेत जुताई का तरीका (Plowing the Field)

इसके लिए खेत की गहरी तरह से जुताई करनी होती है, तथा खेत को अच्छी तरह से जोतकर उचित मात्रा में उर्वरक मिलाकर खेत को अच्छी तरह से तैयार करना होता है, क्योंकि इसके पौधे एक बार लग जाने पर कई बार फसल देते हैं।

खेत की पहली जुताई को पलाऊ लगा कर करना चाहिए, फिर गोबर की खाद को डालकर उसे कल्टीवेटर की सहायता से तिरछी जुताई कर खाद को मिट्टी में अच्छे से मिला देना चाहिए। इसके बाद खेत में पानी लगा देना चाहिए और जमीन के हल्का सूख जाने के बाद उसमें N.P.K. की पर्याप्त मात्रा को मिलाकर रोटोवेटर चलवा दे। जिससे खेत बिलकुल समतल और मिट्टी भुरभुरी हो जाएगी और खेत में जलभराव की समस्या भी नहीं होगी।

केसर का बीज लगाने का सही समय और तरीका (Right Time and Method of Planting Seeds)

केसर की फसल लगभग 6 महीने में तैयार हो पाती है। केसर की अच्छी गुणवत्ता को प्राप्त करने के लिए केसर के बीजों को सही समय पर लगाना बहुत जरूरी होता है, क्योंकि अच्छी गुणवत्ता के आधार पर ही केसर की बिक्री होती है।

केसर के बीजों को बारिश का मौसम खत्म होने के बाद जुलाई से लेकर सितम्बर माह तक लगा देना चाहिए। अगस्त महीने के शुरुआत में इन बीजों को लगाना सबसे अच्छा माना जाता है। अगस्त के मौसम में बीजों को लगा देने के बाद सर्दियों के शुरुआती मौसम में इसके पौधे केसर देने के लिए तैयार हो जाते हैं, जिससे ज्यादा सर्दी में केसर के खराब होने का खतरा नहीं होता है। केसर के बीजों को खेत में समतल तथा मेड दोनों ही तरीके से लगा सकते हैं, समतल तरीके से लगाने पर दो पौधों के बीच में डेढ़ से दो फीट की दूरी होना जरूरी है, और मेड पर लगाने पर प्रत्येक मेड के मध्य लगभग एक से डेढ़ फीट की दूरी होनी चाहिए और मेड पर लगाए गए पौधों में एक फीट की दूरी होनी चाहिए। कश्मीरी मोगरा केसर के लिए प्रति हेक्टेयर लगभग 1 से 2 क्विंटल बीज की आवश्यकता होती है, यह बीज लहसुन की तरह होता है, और अमेरिकी केसर उगाने के लिए आधा किलो बीज ही काफी होते हैं।

पौधों की सिंचाई का तरीका (Plant Irrigation Method)

केसर के बीजों को खेत में लगाने के पश्चात इसकी सिंचाई कर देनी चाहिए। यदि केसर को शुष्क प्रदेशों में उगाया जा रहा है, तो सर्दियों के मौसम में 15 दिन में सिंचाई करते रहना चाहिए। गर्मियों के मौसम में प्रत्येक सप्ताह में दो बार सिंचाई करनी चाहिए और बारिश के मौसम में आवश्यकता पड़ने पर ही इसकी सिंचाई करे।

उर्वरक की सही मात्रा (Right Amount of Fertilizer)

उर्वरक की सही मात्रा के लिए खेत को तैयार करते वक्त जुताई के समय 10 से 15 गाड़ी पुरानी गोबर की खाद को प्रति एकड़ के हिसाब से डालना चाहिए। इसके अतिरिक्त वह किसान जो रासायनिक खाद का इस्तेमाल करना चाहते हैं। वह N.P.K. की सही मात्रा को खेत में आखरी जुताई से पहले छिड़क दे, साथ ही वेस्ट डिकम्पोज को सिंचाई के साथ पौधों को देना चाहिए।

खरपतवार पर नियंत्रण कैसे करे (How to Control Weeds)

केसर के पौधों को खरपतवार से बचाने के लिए इसकी शुरुआती देखरेख जरूरी होती है। जब खेत में बीच अंकुरित होने लगे तब उसके कुछ दिन बाद पौधों की निराई – गुड़ाई कर देनी चाहिए। इसके बाद 20 दिन के अंतराल में दो से तीन और गुड़ाई कर देनी चाहिए, इससे पौधे अच्छे से विकास करते हैं। उन प्रदेशों में जहां बर्फ नहीं पड़ती है, वहां पौधों की देखभाल की आवश्यकता पड़ती है। सर्दियों का मौसम इसके पौधों के लिए बिलकुल अनुकूल होता है, किन्तु गर्मियों के मौसम में अधिक गर्मी से इनके पौधों के नष्ट होने का खतरा होता है। गर्मी से बचाने के लिए इनके पौधों को छाया की जरूरत होती है।

केसर की तुड़ाई और सुखाई कैसे करे (How to Harvest and Dry Saffron)

केसर के पौधे खेत में रोपाई करने के तीन से चार माह पश्चात केसर देने लायक हो जाते हैं। पौधों में लगे फूलों पर जब पंखुडिया लाल व भगवा रंग की दिखाई देने लगे तब उन्हें तोड़ कर जमा कर लें। इसके

बाद तोड़ी गयी इन पंखुडियों को किसी छायादार स्थान पर सूखा लें। केसर के पूरी तरह से सूख जाने पर उसे किसी बर्तन में रख लें।

केसर की पैदावार और मूल्य (Saffron Yield and Benefits)

कश्मीरी मोंगरा केसर तक्ररीबन 1,50,000 फूलों से एक किलो केसर प्राप्त होती है, वहीं अमेरिकन केसर की बात करे तो वह इसकी पैदावार से अधिक पैदावार करती है। अमेरिकी केसर एक बीघा खेत में एक किलो तक केसर प्राप्त होता है, किन्तु दोनों के बाजार भाव में काफी अंतर देखने को मिलता है।

कश्मीरी मोंगरा केसर की कीमत तीन लाख के आसपास होती है, वहीं अमेरिकन केसर की बात करे तो केसर की गुणवत्ता के अनुसार 50 हजार से 2 लाख तक के मूल्य में बेचा जाता है। इस तरह से अगर किसान भाई चाहे तो अमेरिकन केसर की खेती कर प्रति बीघा में 50 हजार से दो लाख तक की कमाई कर सकते हैं।